

॥ ॐ ॥

पंचकोश विवेक

गुरुस्तुति

त्रिभंगी छन्द ।

(१)

जय जय गुरु स्वामी, अंतर्दामी, सच्चित् आनंद राशी ।
सचराचर नायक, जन सुखदायक, माया पर अविनाशी ॥
जय करुणा सागर, सब विधि नागर, शरणपाल भगवाना ।
भक्तन हितकारी, नर तनु धारी, गावत वेद पुराणा ॥

(२)

जय भव भय भंजन, नित्य निरंजन, गुणातीत गुणखानी ।
जय अचल अकामा, पूरण कामा, मानद आप अमानी ॥
जय कमल विलोचन, संशय मोचन, ब्रह्म रूप जग त्राता ।
परिपूरण त्यागी, जन अनुरागी, चारि पदारथ दाता ॥

(२)

(३)

जानत सव विद्या, हरत अविद्या, अकल सकल कल पंडित ।
नहिं लेश विषमता, अविचल समता, यकरस ज्ञान अखंडित ॥
कोमल चित योगी, विषय वियोगी, सुखकर चिंता हर्ता ।
निज सेवक संगी, सदा असंगी, कर्ता महा अकर्ता ॥

(४)

निर्भय भय नाशक, ज्ञान प्रकाशक, सेवत नर बड़ भारी ।
ब्रह्मादिक देवा, करते सेवा, चरण कमल अनुरागी ॥
प्रभु निश दिन ध्याऊँ, गुणगण गाऊँ, कामादिक हर लीना ।
यह मन क्रम वाचा, सेवक सांचा, जन अपना कर लीना ॥

(५)

पामर अविचारी, मिथ्याचारी, सत्य असत्य न जाने ।
सुत वित लिपटाने, निपट अयाने, किं सद्गुरु पहिचाने ॥
नहिं सद्गुरु चीन्हा, अति ही दीना, लख चौरासि भटक्ते ।
गुरुपद चित दीना, परम प्रवीणा, नहिं कौशल्य ! अटकते ॥

